Impact Factor – 6.261

ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

October-2018 Special Issue – LXIV

हिंदी की गरिमा एवं अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज

अतिथि संपादक
प्रा. निवृत्ति लोखंडे
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
शंकरराव मोहिते महाविद्यालय, अकलूज
तह.- माळशिरस, जिला- सोलापुर

विशेषांक कार्यकारी संपादक
डॉ. अपर्णा कुचेकर
विभागाध्यक्ष, स्नातक एवं स्नातकोत्तर हिंदी विभाग,
शंकरराव मोहिते महाविद्यालय, अकलूज
तह.- माळशिरस, जिला- सोलापुर

मुख्य संपादक
डॉ. धनराज धनगर
कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, येवला
तह.- येवला, जिला- नासिक

This Journal is indexed in :
- University Grants Commission (UGC) List No.
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)–0.676 (2013)
Special Issue 64 : हिंदी की गरिमा एवं अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
October-2018

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	शीर्षक	लेखक	पृ.क्र.
1	वैश्वीकरण के दौर में भाषा और अनुवाद	डॉ.गिरीश काशिद	06
2	सिनेमा एवं हिंदी	डॉ.देवकला शर्मा	11
3	अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज और हिंदी	डॉ. अमोल चव्हाण	17
4	कम्प्युटर में हिंदी का प्रयोग समस्या एवं समाधान	डॉ. राहुल उठवाल	20
5	अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज और हिंदी	डॉ.विजय पाल	27
6	इंटरनेट जगत और हिंदी	डॉ. सुमेध नागदेवे	30
7	हिंदी सिनेमा और भारतीय भाषाएँ	डॉ. आरिफ जमादार	34
8	भाषा, हिंदी भाषा संदर्भ रोजगार	डॉ.ऋषी चौबे	38
9	वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मिडिया अनुवाद 'डबिंग'	डॉ. नवनाथ शिंदे	42
10	सिनेमा एवं हिंदी	डॉ.सतीश घोरपडे	46
11	अंतरराष्ट्रीय क्षितिज एवं हिंदी	डॉ. बलवंत बी.एस	49
12	विश्व में हिंदी का महत्त्व	डॉ.सुब्राव जाधव	53
13	सिनेमा और हिंदी का अत:संबंध	डॉ. कल्पना पटोले	58
14	बैंको में प्रयुक्त हिंदी	डॉ. शीला भास्कर	62
15	प्रयोजनमूलक हिंदी : स्वरूप एवं दिशाएँ	डॉ.शीतल माने	68
16	मातृभाषा हिंदी	डॉ. पूनम सिंह	71
17	प्रयोजनमूलक हिंदी : स्वरूप एवं उपयोगिता	डॉ.मदन खरटमोल	74
18	अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में हिंदी	डॉ.नीलम वीराणी	77
19	राष्ट्रीय अस्मिता एवं रोजगार की भाषा हिंदी	डॉ.संजय धोटे	80
20	व्यावसायिक क्षेत्र में हिंदी का बदलता स्वरूप	डॉ.सपना तिवारी	84
21	हिंदी पत्रकारिता की महत्त्वपूर्ण भूमिका	प्रा.दत्तात्रय साळवे	88
22	हिंदी ने 'कर ली दुनिया मुट्ठी में'	प्रा.सूर्यकांत चव्हाण	91
23	वैश्वीकरण के दौर में हिंदी एवं रोजगार	दिलना के	95
24	सिनेमा एवं हिंदी	श्रीमती प्रीती गौतम	99
25	संसद से लेकर सडक तक धुंधली सी हो गई है हिंदी	सुनील कुमार यादव	103
26	कम्प्युटर में हिंदी का प्रयोग समस्या एवं समाधान	प्रा.संगीता भोसले	105

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 64 : हिंदी की गरिमा एवं अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
October-2018

वैश्वीकरण के दौर में भाषा और अनुवाद

डॉ. गिरीश काशिद
हिंदी विभाग,
एस.बी.झेड. महाविद्यालय, बाशी,
जिला-सोलापुर-४१३४०१
महाराष्ट्र
मोबाईल-9423281750
E–Mail- girishkashid7@gmail.com

इक्कीसवीं सदी में न केवल मानव जीवन ही नहीं तो भाषा और साहित्य में भी अमूलाग्र परिवर्तन हुआ है। इस परिवर्तन की गति तीव्र है। सूचना प्रौदयोगिकी देश दुनिया की बातों को तुरंत प्रसारित कर रही है। इससे भाषा और साहित्य में भी नई उपलब्धियाँ सामने आ रही हैं। नई सदी में नई पीढ़ी भाषा और साहित्य का प्रयोग नये रूप में कर रही है। इस सदी ने एक ओर भाषा का सपाटीकरण कर दिया है तो दूसरी ओर उसके लिए नये अवसर भी प्रदान किए हैं। हिंदी अब जनमानस की भाषा के साथ बाजार की एक मजबूरी भी बन गई है। मुक्त बाजार और वैश्वीकरण का दबाव हिंदी को मॉग के अनुकूल ढाल रहा है। हिंदी के महत्त्व को बाजार ने समझा है। अर्थात इसके पीछे उपभोक्ता वर्ग को अपनी गिरफ्त में करने की साजिश है। संचार क्रांति और विज्ञापन संस्कृति ने हिंदी को अपनाया है। वह उत्पादनों के क्रय-विक्रय का माध्यम बन रही है। दूरसंचार माध्यम, फिल्म, पत्र-पत्रिकाओं ने हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। दिन-ब-दिन संचार माध्यमों में वृध्दि हो रही है और उसमें हिंदी का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। इंटरनेट और यूनिकोड ने हिंदी को वैश्विक बनाने में अहं योगदान दिया है। वैश्वीकरण के कोलाहल में हिंदी अपनी उपस्थिति दर्ज कर रही है। उपनिवेशवादी व्यवस्था ने जिन प्रतिनिधि भाषाओं को चुना है उनमें हिंदी एक है। बहुभाषिक भारत देश में हिंदी एक प्रमुख भाषा होने के कारण उसे चुना गया है। इससे यह साबित होता है कि हिंदी वैश्विक बाजार के अनुकूल भाषा है। यदि वह उसके अनुकूल न बनेगी तो उसको बाधा पहुँच सकती है। इस दौर में हिंदी अपनी उपयोगिता सिध्द कर रही है तो उसका विकास ही होगा। आज संचार माध्यम हिंदी को अपना रहे हैं। वैश्वीकरण के दौर में अभिव्यक्ति और भाषा की भूमिका अहं बन गई है। "वैश्वीकरण का यह दौर प्रत्येक राष्ट्र के परीक्षण का है। जिसमें अभिव्यक्तियाँ अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाएँगी तथा जिस राष्ट्र का संप्रेषण जितना प्रखर और परिस्थितिजन्य होगा वह बाजी उतनी ही सुगम तौर पर देश के हाथ होगी। अतएव भूमंडलीकरण में भाषाओं की वर्चस्वता की अघोषित और अप्रत्यक्ष लड़ाई जारी है।"[१]

अनुवाद दो भाषा एवं संस्कृति को जोड़नेवाली कडी है। भारत में अनुवाद की लंबी परंपरा रही है। नवजागरण काल में अनुवाद को विशेष गति मिली। भारत में भौगोलिक एवं सांस्कृतिक परिवेश के चलते अनुवाद का स्थान महत्त्वपूर्ण है। आजादी के आंदोलन के दौरान अनुवाद ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। बीसवीं सदी में बड़ी संख्या में साहित्यिक अनुवाद हुए। इक्कीसवीं सदी में तो अनुवाद एक विशिष्ट विधा बन गई है। आज अनुवाद विश्वज्ञान प्राप्त करने का माध्यम बन गया है। साहित्यिक अनुवाद पहले से होते आए हैं लेकिन इक्कीसवीं सदी में साहित्येतर अनुवाद भी बड़ी संख्या में हो रहे हैं। वैज्ञानिक, तकनीकी,

इसका अधिक परिणाम हुआ है। बोलियों का साहित्य लुप्त हो रहा है। बाजार ने एक कृत्रिम भाषा को जन्म दिया है। साहित्य से देशज संदर्भ, बिंब गायब हो रहे हैं। भावना, मूल्य, प्रकृति से मनुष्य कट रहा है। सर्जनात्मक चेतना पर आघात हो रहा है। हम ग्लोबल होने के मोह में लोकल संदर्भ से दूर होते जा रहे हैं। कमलेश्वर की बात यह समीचीन लगती है, "भूमंडलीकरण की छतरी के नीचे बहुराष्ट्रीय कंपनियों का जो हमला आज हो रहा है, वह केवल हमारी अर्थव्यवस्था पर नहीं है। इसे समझना जरूरी है। यह हमला प्रगतिकामी जीवंत भारतीय संस्कृति, परंपरा, जीवनशैली पर ही नहीं, बल्कि वैचारिक संघर्ष से जैसे-तैसे विकसित होते हुए लोकतांत्रिक मूल्यों पर भी है।"[६]

आज भाषा के प्रति सजगता और सावधानी बरतना अनिवार्य बन गया है। भाषा की सर्जनात्मक शक्ति को कायम रखना होगा। भाषा को नई तकनीकी के अनुकूल बनाना होगा। हिंदी का मानकीकृत रूप अपनाना आवश्यक है। शिक्षा प्रणाली में बदलाव की आवश्यकता है। युवा पीढी को भाषा से जोड़ना आवश्यक है। अनुवाद को बढावा देकर हिंदी की बोलियों का और अन्य भारतीय भाषाओं का साहित्य हिंदी में लाना आवश्यक है। इस दिशा में प्रयास भी हो रहे हैं लेकिन इसमें व्यापकता चाहिए।

निष्कर्षतः यह कह सकते हैं कि अनुवाद विभिन्न भाषा एवं संस्कृति को जोडनेवाला सेतु है। यह वर्तमान युग की आवश्यकता है। अनुवाद के जरिये ही हम वैश्विक संदर्भों से जुडते है और अपने संदर्भों को वैश्विक बनाते हैं। अनुवाद ने साहित्य को व्यापक विस्तार दिया है। वैश्वीकरण के कारण अनुवाद की उपयोगिता बढ़ती जा रही है। हिंदी के प्रचार-प्रसार में भी अनुवाद महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। वह एक ओर अपनी भाषा के साहित्य और संदर्भों को व्यापकता प्रदान कर रहा है तो दूसरी और वैश्विक अभिजात साहित्य और ज्ञान को अपने भाषा में ला रहा है। अनुवाद विश्व को नजदीक लाने का कार्य कर रहा है। इस संदर्भ में अनुवाद वैश्विक संस्कृति की स्थापना में अहं भूमिका निभा रहा है ऐसा कहे तो अत्युक्ति नहीं होगी।

RESEARCHJOURNEY

संदर्भ संकेतः

१. http://dhirendrasingh.jagranjunction.com/2012/05/18, page no. 2
२. डॉ.जयंतीप्रसाद नौटियाल, अनुवाद सिध्दांत एवं व्यवहार, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, २०००, पृ.४६
३. सं.नीता गुप्ता, डॉ. हरीशकुमार सेठी, अनुवाद, जुलाई-सितंबर, २०१३, अंक १५६, संपादकीय
४. http://hi.wikipedia.org/wiki
५. सं.रमेश राऊत, साक्षात, जुलाई-अगस्त-सितंबर, २००३, वर्ष ५, अंक ४, पृ.२
६- http://www.hindibhawan.com